आज की मुरली का सहज सार ---------- Date:09-08-14

जिसे सारे विश्व कि सर्व आत्माये सत्य (Truth) कहती है, वह सत्यवान परमपिता-परमात्मा शिवबाबा ने आज की मुरली में हम सेवाधारी बच्चों से कहा, ऑनेस्ट उसको कहा जाता है जो सारे युनिवर्स की सेवा करें. एक सेन्टर खोला, आप समान बनाया, फिर दूसरे स्थान पर सेवा के लिए जाना चाहिए. एक ही स्थान पर अटक नहीं जाना चाहिए.

हम सब में से जो भी लौकिक नौकरी करते है, वह सब जानते है वहॉ क्या होता है? जब कोई नया भरती होता है और शायद वह ज्यादा तेज है तो उसका उपरी उसके साथ कैसा व्यवहार करेंगे? उसे कोई भी नया काम सिख ने के लिए देंगे तो उसकी बार-बार भूल निकालेंगे, दूसरों के सामने उसे नीचा दिखाने की कोशिश करेंगे. वह हर प्रयास करेंगे कि उसका उमंग-उत्साह ही टुट जायें. उपरी यह भी इच्छा रखेंगे कि वह उसका ही कहा मान कर चले या उसे बड़ा मान दे, क्योंकि वह उसका सीनियर हैं. उपरी जो होगा, नये को सदा अपने से 2-3 स्टैप नीचा रखेंगे.

अभी हमें अपने में चेक करना है कि हम जो भी निमित्त है सेन्टर चलाने के या सेन्टर में सरेन्डर होकर निमित्त सेवा करने के, हमारे साथ जो भी जूनियर है या नया आता है, उसके साथ हम कैसा व्यवहार करते है?

बाबा ने आज स्पष्ट कहा कि ऑनेस्ट सेवाधारी वह है जो दूसरों को आप समान बनाये और एक जगह ठहर न जाये पर दूसरे सेन्टरो पर जाकर भी सेवा करें और वहॉ पर भी ऐसे ही दूसरों को आगे बढ़ाये. बाबा ने कहा, बाबा नये-नये सेन्टर पर अच्छी-अच्छी ब्राहमणियों (टिचर्स) को रखते है इसलिए कि जल्दी-जल्दी आप समान बनाकर फिर और सेन्टर्स पर भागना चाहिए सर्विस को उठाने के लिए. ब्राहमणियों का काम है एक सेन्टर जमाया फिर जाकर और सेन्टर जमावें.

लौकिक में एक बिजनेसमेन बाप अपने बच्चे को जब नया बिजनेस सिखाना चालू करता है तो कैसे उसे हर एक बात अच्छी तरह से समझाता है, उसके हर कार्य पर ध्यान देता है. फिर बहुत सच्चे दिल से उस कार्य को बच्चा ठीक से कैसे करें वह भी सिखाता है. फिर उस बच्चे के कार्य में वह पूरा फ़ेथ भी रखता हैं. जब वह बच्चा कुछ बिजनेस अपने आप करना चालू करता है तो वह बाप सबसे ज़्यादा खुश होता हैं. एक बिजनेसमेन बाप ही पूरा ऑनेस्ट होकर अपने बच्चे को बिजनेस सिखाता है क्योंकि उस बच्चे को उसे आप समान बनाना हैं.

वैसे ही हमें भी बाबा ने जो भी सेवा निमित्त बनाया है वह सेवा हमें दूसरों को सच्चे दिल से सिखलानी चाहिए कि वह भी सेवा के लायक बन जाये और जब वह सेवा के लायक बन जाये तो हमें दूसरी सेवा में लग जाना चाहिए या दूसरे सेन्टर पर जाकर सेवा करनी चाहिए.

ऐसा देखा गया है कि जो बच्चे, सच्चे दिल से बाबा कि यज्ञ सेवा करते है और बहुतो को आप समान बनाते है, उनका नाम और शान भी बढ़ता है और बाबा भी उनसे बहुत-बहुत सेवा करवाता है - इसे ही कहते है, सच्चे दिल पर साहेब राजी.

ॐ शांति.